हास्य
व्यंग्य
संग्रह

धर्मपाल महेंद्र जैन

सर क्यों दाँत फाड़ रहा है?

[हास्य-व्यंग्य संकलन]

धर्मपाल महेंद्र जैन

पापा एवं बाईसा को

/प्रथम संस्करण (1984) की भूमिका से/

'ज़रूरी नहीं कि व्यंग्य में हँसी आए। यदि व्यंग्य चेतना को झकझोर देता है, विद्रूप को सामने खड़ा कर देता है, आत्म साक्षात्कार कराता है, सोचने को बाध्य करता है, व्यवस्था की सड़ांध को इंगित करता है और परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है तो वह सफल व्यंग्य है।'

- हरिशंकर परसाई

जन्म : 1952, रानापुर, कर्मभूमि मेघनगर, जिला – झाबुआ, म. प्र.

निवास: टोरंटो (कनाडा)

शिक्षा : भौतिकी; हिन्दी एवं अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर

प्रकाशन : चार सौ से अधिक कविताएँ व हास्य-व्यंग्य प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, आकाशवाणी से प्रसारित। "सर क्यों दाँत फाड़ रहा है?" व्यंग्य संकलन एवं "इस समय तक" कविता संग्रह प्रकाशित।

संपादन : स्वदेश दैनिक (इन्दौर) में 1972 में संपादन मंडल में, 1976-1979 में शाश्वत धर्म मासिक में प्रबंध संपादक।

संप्रति : सेवानिवृत्त, स्वतंत्र लेखन। दीपट्रांस में कार्यपालक। पूर्व में बैंक ऑफ इंडिया, न्यू यॉर्क में सहायक उपाध्यक्ष एवं उनकी कई भारतीय शाखाओं में प्रबंधक।

स्वयंसेवा : जैना, जैन सोसायटी ऑफ टोरंटो व कैनेडा की मिनिस्ट्री ऑफ करेक्शंस के तहत आयएफसी में पूर्व निदेशक। न्यूयॉर्क में सेवाकाल के दौरान भारतीय कौंसलावास की राजभाषा समिति और परमानेंट मिशन ऑफ इंडिया की सांस्कृतिक समिति में सदस्य। तत्कालीन इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स में परीक्षक।

ईमेल : dharmtoronto@gmail.com

फ़ोन : + 416 225 2415

सम्पर्क : 1512-17 Anndale Drive, Toronto M2N2W7, Canada

अनुक्रम

सर क्यों दाँत फाड़ रहा है?		6
हवाई अड्डा लाना है		9
एक अदद तत्व		12
साहब के दस्तख़त		15
खेल मंत्री उवाच		17
उधार वर्ष मनाना है		20
जा तुझको जमी दुकान मिले		23
टेलीफ़ोन लीला		25
चलो साफा भी मिलेगा		28
ब्रीफकेस प्रसंग		31
कंडक्टर–लिपि		34
नदी लाओ समिति		36
महँगाईबाला का स्वयंवर		39
आख़िरी तारीख़ का इंतज़ार		42
राष्ट्रीय खेल के लिए बैठक		45
फाइल इतनी दीजिए		48
सहमति की संस्कृति		51
ख़ामोश! प्रवेश चालू है		54
ऐसे मत बरसना बदरवा		57

क़लमकार! नारे रचो		60
सत्ता का समीकरण		64
आदमी के बच्चे		67
धन्य हैं ये ऋषि-मुनि		70
अच्छी सरकार		73
जंगल : सरकारी जंगले में		75
अंधों को आँख वाले अच्छे नहीं लगते		78
दफ़्तर का सप्ताह : पाँच दिन		81
लाभ-शुभ के चौघड़िए में		84
दीवारें, समाज का चेहरा		87
सफ़रनामा एक डॉक्टर का		90
डाका डालने की क्या ज़रूरत?		94

सर क्यों दाँत फाड़ रहा है?

इन दिनों पुलिस की पूछताछ चल रही है। पुलिस वालों को पुलिस वाले ही डंडे मार रहे हैं और जनता देख रही है। अख़बार वाले छाप रहे हैं। सरकार कुछ करने के बजाय खट्टे-मीठे चटखारे ले रही है। अभी तक पुलिसगण रिश्वत खाते थे, अब बलात्कार भी करने लगे हैं। पहले ज़िन्दा अख़बार जलाते थे, अब ज़िन्दा आदमी जलाने लगे हैं। पहले वकीलों के संग आँख लड़ाते थे, अब हाथ-पाँव लड़ाने लगे हैं। पुलिस वाले पहले सरकारी कर्मचारी थे, अब ख़ुद को ईदी अमीन और नरेंद्र मोदी समझने लगे हैं। हमारे यहाँ आवारा पशुओं को काँजी हाउस में और आवारा आदमियों को थाने में रखने की व्यवस्था है। पुलिस वालों को थाने के आस-पास रखने का कुछ यही कारण लगता है।

बिना वर्दी के पुलिस वाले ताबूत लगते हैं। वर्दी उन्हें सामाजिक मान्यता देती है इसलिए वे घर में भी वर्दी पहन कर सोते हैं। रात-दिन चोरों उठाईगिरों में रहने के कारण उनकी नस्ल बदल गई है। वे अब बदला-बदला व्यवहार करने लगे हैं। लोग पुलिस को मौके की तलाश में रहने वाला चलता–पुर्ज़ा कहते हैं। कुछ समय पहले की बात है, तब मेरे कपड़ों में जेबें थी। जेब में रुपये होते थे एक दिन मेरी जेब कटी। जेबकतरा भागने लगा। मैं चिल्लाने लगा। सारा नगद, नारायण हो गया था। मैंने आँखें बन्द कर प्रभु स्मरण किया। आँखें खोलीं तो साक्षात प्रभु खड़े थे, पुलिस वेशभूषा में। वे मुझे थाने ले गए। रपट लिखी। मैंने उन प्रभु को प्रसाद चढ़ाया, प्रभु प्रसन्न नहीं हुए, उन्होंने और प्रसाद माँगा। मेरी दूसरी जेब प्रसाद में खाली हो गई। न जेबकतरा मिला, न प्रभु ही लौट कर आए। तब से मैं पुलिस को राम की माया मानता हूँ। धर्मग्रन्थों में प्रभु के तैंतीस करोड़ अवतार माने गए हैं। पुलिस-प्रभु पंचनामा लिखते, गाली उच्चार करते, वलन-समाचार पढ़ते और जादुई डंडे के क़रतब दिखाते, यदा-कदा टॉकिज़ों और बस स्टैंड पर लाइन सीधी करवाते हुए मिल जाते हैं। इस दैनिक लीला से ये तनख़ा से चार गुनी ग़ैर-सरकारी तनख़ा पका लेते हैं। सरकार की दस हज़ार रुपट्टी तो ये और इनकी मोटर साइकिल ही पी जाती है।

पुलिस का काग़ज़ी उद्देश्य जनसेवा और देशभक्ति है। वे ख़ाकी नेकर और कमीज़ में लट्ठ बजाते हैं तो जन सेवा हो जाती है। सोने के बिस्कुट और अफ़ीम की ट्रकें रातों-रात पार करवा कर ये गेहूँ के दस-बीस थैले पकड़

लेते हैं। ये इसे देशभक्ति मानते हैं। पुलिस की फ़ुर्ती और चतुराई बेमिसाल है। नेताजी के घर पन्द्रह- बीस हज़ार रुपयों की चोरी हो जाए तो पच्चीस-पचास लोगों को पकड़ लाते हैं। गाँव में डकैती डल जाए तो इन्हें सिर्फ़ खाली पेटियाँ ही गाँव के बाहर मिल पाती हैं। बस और ट्रेन लुट जाएँ तो ये जंगल का चप्पा-चप्पा छान कर बकरे और मुर्गे पकड़ लाते हैं। चोरी-डकैती, लड़ाई-झगड़े और दंगे-फ़साद होते रहें तो इनकी दाल-रोटी निकल जाती है। अन्यथा तंगी में बाबा रविशंकर शुक्ल के ज़माने की टेबल-कुर्सी निकाल कर थाने के सामने बैठ जाते हैं। जनरल चेकिंग भी करते हैं और मंदिर का चन्दा भी वसूल लेते हैं। दौरों में मंत्रियों के आगे-पीछे मंडराते हुए पुलिस वाले मंत्री को इज्ज़तदार बनाते हैं। सिविल कपड़ों में इनकी सभा में भीड़ भी बढ़ाते हैं। पुलिस निश्चित ही सरकार की बिगड़ी संतान है। ख़तरे के वक़्त सरकार पुलिस को कोसती है और ऐसा बजाती है जैसे पुलिस इंसान नहीं विधानसभा की टेबलें हो। अन्य दिनों में पुलिस फिर शेर हो जाती है और सरकार मिमियाने लगती है।

पुलिस की वर्दी पहले सूती थी। वे तब कम सूतते थे। अब वर्दी मक्खन-डग और टेरीकॉट की हो गई, इसलिए ज़्यादा सूतते हैं। आजकल शराब के ठेकों की तरह थानों की भी बोलियाँ लगने लगी हैं। समझदार ऊँची बोली लगाकर कमाऊ थाना पा लेते हैं। इसमें असफल थानेदार, बेचारे, दूसरे दिन लाईन-अटैच हो जाते हैं। इसलिए सिपाही थानेदार के लिए रिश्वत लेता है। थानेदार सी. आय. साहब के लिए रिश्वत लेता है। सी.आय. के लिए डी.एस.पी देवता है और एस.पी. भगवान। वह उन्हें नेवैद्य चढ़ाता है। इस बड़े रावले में बहुत-सी हाथी पोलें हैं।

पुलिस ने फ्री में रोज़नामचे में रिपोर्ट लिखना बन्द कर दिया है। रिपोर्ट लिखने से वैसे भी उनकी छवि बिगड़ती है। अपराध-संख्या बढ़ जाती है। छवि के डर से पुलिस ख़ुफिया कुत्तों के साथ रहने लगी है। दोनों को छूत की बीमारी हो गई है। ज़्यादातर कुत्ते खूंखार हो गए हैं और पुलिस भौंकने लगी है। शराब, गांजा, भाँग, अफ़ीम और चरस की हल्की-सी गंध इनके दिमाग़ का जीरो बल्ब प्रज्वलित कर देती है। अबला नारी को देख ये पुरुषार्थी बन जाते हैं। इनके लिए क़ानून और व्यवस्था अचार और मुरब्बे जैसी हो गई है। उंगलियाँ चाटते हुए ये प्रजातंत्र को खाते-चबाते रहते हैं। हड़ताल, जुलूस, दुकानों की लूट-पट्टी और सिटी बसों के अग्नि-यज्ञ से पुलिस भी प्रभावित हुई है। वह आन्दोलन करने लगी है। नटवरलाल जेल से भाग रहे हैं, डाकू थाना लूट रहे हैं और पुलिस नारे लगा रही है 'जो हमसे टकराएगा, हवालात में जाएगा।'